हिमालय की बेटियाँ

श्रीमती हन्सी
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रुड़की

नदियों को माँ मानने की परम्परा भारतीय संस्कृति में अत्यंत पुरानी है। नदियों को माँ का स्वरूप तो माना ही गया है लेकिन लेखक नागार्जुन उन्हें बेटियों, प्रेयसी व बहन के रूपों में भी देखते हैं।

नदियाँ युगों–युगों से मानव जीवन के लिए कल्याणकारी रही हैं। ये युगों से एक माँ की तरह हमारा पोषण करती हैं। इनका जल भूमि की उर्वराशक्ति बढ़ाने में विशेष भूमिका निभाता है। इसलिए नदियाँ माता के समान पवित्र एवं कल्याणकारी हैं। मानव नदी को दूषित करने में कोई कसर नहीं छोड़ता परन्तु इसके बावजूद अपार दुःख सहकर भी इस प्रकार का कल्याण केवल माता ही कर सकती है। अतः काका कालेलकर ने नदियों की माँ समान विशेषताओं के कारण उन्हें लोकमाता का दर्जा दिया है।

अभी तक मैंने उन्हें दूर से ही देखा था। बड़ी गंभीर, शांत, अपने आप में खोई हुई लगती थी। सभ्रांत महिला की भांति वे प्रतीत होती थी। उनके प्रति मेरे दिल में आदर और श्रद्धा के भाव थे। माँ और दादी, मौसी और मामी की गोद की तरह उनकी धारा में डुबकियां लगाना। परन्तु इस बार जब मैं हिमालय के कंधे पर चढ़ी तो वे कुछ और ही रूप में सामने थी। मैं हैरान थी कि यही दुबली–पतली गंगा, यही यमुना, यही सतलज समतल मैदानों में उतरकर विशाल हो जाती हैं। उनका उछलना और कूदना, खिलखिलाकर लगातार हँसते जाना, इनकी यह भाव–भंगिमा, इनका यह उल्लास मैदान में उतरकर कहां गायब हो जाता है?

वे कहां भागी जा रही हैं? वह कौन सा लक्ष्य है जिसने इन्हें बेचैन कर रखा है? अपने महान पिता का विराट प्रेम पाकर भी अगर इनका हृदय अतृप्त ही है तो वह कौन होगा जो इनकी प्यास मिटा सके। बर्फ जली पहाडियाँ, छोटे–छोटे पौधों से भरी घाटियाँ, ऐसी इनकी लीला निकेतन! खेलते–खेलते जब ये जरा दूर निकल जाती हैं तो देवदार, चीड़, सरू, चिनार, सफेदा, कैल में पहुंचकर शायद इन्हें बीती बातें याद करने का मौका मिल जाता होगा। कौन जाने बूढ़ा हिमालय अपनी इन नटखट बेटियों के लिए कितना सिर धुनता होगा! बड़ी–बड़ी चोटियों से जाकर पूछिये तो उत्तर में विराट मौन के सिवाय उनके पास रखा ही क्या है?

सिंधु और ब्रहमपुत्र ये दो ऐसे नाम हैं जिनके सुनते ही रावी, सतलज, व्यास, चिनाब झेलम, गंगा, यमुना, सरयू, कोसी आदि हिमालय की छोटी–बड़ी सभी बेटियाँ आँखों के सामने नाचने लगती हैं। वास्तव में सिंधु और ब्रहमपुत्र स्वयं कुछ नहीं हैं। दयालु हिमालय की एक–एक बूँद न जाने कब से इकट्ठा हो–होकर इन दो महानदियों के रूप में समुद्र की ओर प्रवाहित होती रही हैं। कितना सौभाग्यशाली है वह समुद्र जिसे पर्वतराज हिमालय की इन दो बेटियों का हाथ पकड़ने का श्रेय मिला है। जिन्होंने मैदानों में इन नदियों को देखा होगा, उनके ख्याल में शायद ही यह बात आ सके कि बूड़े हिमालय की गोद में बच्चियाँ बनकर ये कैसे खेला करती हैं।

ममता का एक और भी धागा है, जिसे हम इनके साथ जोड़ सकते हैं। बहन का स्थान कितने कवियों ने इन नदियों को दिया है। एक कवि ने कुछ ऐसे लिखा है:–

जय हो सतलज बहन तुम्हारी, लीला अचरज बहन तुम्हारी,
हुआ मुदित मन हटा खुमारी, जाऊँ मैं तुम पर बलिहारी,
तुम बेटी यह बाप हिमालय, चिंतित पर, चुपचाप हिमालय
प्रकृति नदी के चित्रित पट पर, जय हो सतलज बहन तुम्हारी।